REVIEWS OF LITERATURE
IMPACT FACTOR : 3.3754 (UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48385 ISSN: 2347-2723
VOLUME - 5 | ISSUE - 9 | APRIL - 2018

औरंगजेब कालीन जाट शक्ति के विद्रोहों का ब्रज प्रदेश पर सामाजिक प्रभाव –एक संक्षिप्त अध्ययन

डॉ. नीरज कुमार गौड़
प्राचार्य , एच के एल कालेज ऑफ ऐजूकेशन,
सम्बध्द पंजाब विश्वविद्यालय, चंड़ीगढ़, गुरूहरसहाय, फिरोजपुर. (पंजाब)

सारांश

औरंगजेब ने मुगलकालीन सामाजिक रूप को बिगाड़ने में महती भूमिका का निर्वहन किया। ब्रजप्रदेश के सन्दर्भ में जाटों की सामाजिक परम्पराओं के विरूद्ध कार्य करने पर उन्हें विद्रोह के लिये प्रेरित किया। जाटों ने जुझारू, पराक्रमी, साहसी एवम स्वाभिमानी गुणों के कारण अपने को अभिजात वर्ग में स्थापित किया। इन्होंने समाज में अपना स्थान कृषक जमीदार से प्रारम्भ कर औरंगजेब के पश्चात अपने आप को शासक के रूप में स्थापित किया।

जाट स्वभाव से ही प्रजातंत्रवाद के पक्षपाती हैं। सम्पूर्ण जाट जाति के दो प्रमुख गुण है, एक तो यह कि वह किसी सत्ता को देर तक सिर झुकाकर नहीं मान सकते दूसरा यह कि सामाजिक व धार्मिक रूढ़ियों की अत्यन्त दासता से घबराते हैं। मुगल शासकों की क्रूर, धर्मान्ध एवं कट्टरपन्थी इस्लामी प्रवृति ने उनकी सामाजिक एवं धार्मिक मान्यताओं, परम्परओं और सस्कृति से खिलवाड़ करने व दमन करने का प्रयास किया तब ब्रज क्षेत्र की जाट शक्ति अपनी युद्ध शैली, पराक्रम, वीरता, शौर्यता तथा साहस में उत्तरोन्तर बृद्धि करते हुये न केवल स्वयं को मजबूत बनाते रहे अपितु अन्य भारतीय जातियों को भी लगातार एक उदाहरण प्रस्तुत करते हुये समाज में सम्मान जनक स्थान प्राप्त करने में सफल रहे।

मुगल काल का यह दुर्भाग्य था कि औरंगजेब के काल में उत्तर भारत का समाज हिन्दू और मुस्लिम दो कट्टर धार्मिक संगठनों में बंट गया था। इसका प्रमुख कारण औरंगजेब की धर्मांधता, इस्लामिक कट्टरपंथता ही नहीं थी बल्कि उसकी हिन्दू नीति ने इस विभाजन में मुख्य भूमिका अदा की। यद्यपि इतिहास साक्षी है कि औरंगजेब और उसके राजपरिवार में हिन्दू रक्त था तथापि वह हिन्दुओं का कट्टर शत्रु हो गया। उसने अपने राज्य का भरपूर इस्लामीकरण करने का प्रयास किया। इसके ठीक विपरीत पूर्व मुगल शासक अकबर महान की समन्वय नीति की तुलना करने पर देखने में आता है कि तत्काल विद्रोही स्वर उभरने का मुख्य कारण औरंगजेब की नीति ही थी। शनैः शनैः हिन्दू वर्ग औरंगजेब का विरोधी होता चला गया और इनमें सबसे प्रमुख विद्रोह जाटवीरों के रहे। इन जाटवीरों ने ब्रजप्रदेश को अपनी कार्य स्थली बनाया। औरंगजेब की संकीर्ण धार्मिक नीति ने शासक और शासित अभिजात एवं सामान्य, हिन्दू तथा मुसलमान की चौड़ी खाई भारतीय समाज में पैदा की जो कि आने वाले समय में गहराती चली गई। हिन्दू विरोधी नीति के तहत ही वह ऐसे कुकृत्य करता चला गया। जिसने समस्त हिन्दू समाज को पीड़ित कर दिया यह कार्य ब्रजप्रदेश में कालांतर में केन्द्रित हो गया। जहॉ जाटों सहित समस्त हिन्दूओं की सामाजिक स्वाधीनता को कुचला जाने लगा। मुगल विद्रोहों को दबाने के लिये फसलें उजाड़ दी जाती थी समाज व संस्कृति को कुचला जाता था। जिसके फलस्वरूप जाटों को पालन पोषण के लिये पशुपालन तथा काश्तकारी के साथ साथ लूटपाट का मार्ग अपनाना पड़ा। इस लूटमार के लिये दुर्दम्य साहस, कुशलता, बुद्धिमत्ता तथा संघर्ष की आवश्यकता पड़ती थी। यहीं कारण है कि जाट धीरे धीरे सामरिक प्रवृत्ति के हो गये। इतिहास जनित घटनायें इस बात का प्रमाण हैं कि जाट शक्ति को न केवल जाटों का ही बल्कि ब्रजप्रदेश के बहादुर राजपूत, गूजर, मीणा, मेव, साधारण मजदूर, किसान तथा बुद्धिजीवियों का अटूट हार्दिक और नैतिक समर्थन प्राप्त था। मुगल सम्राटों की धार्मिक मतान्धता, राजनैतिक अत्याचार, आर्थिक उत्पीड़न और सामाजिक विषमताओं के विरूद्ध वे लड़ते रहते थे। जाटों ने अपने विद्रोह के लिये ब्रजप्रदेश के जमींदार, मजदूर, किसान तथा बहादुर नवयुवकों को एक लडी में पिरोकर सफल क्रान्ति का सूत्रपात किया और सफलतापूर्वक संचालन के लिये शाही खजानों, शाही परगनों तथा शाही फौजों एवं उच्चाधिकारियों को लूटकर धन संचित किया। जाट शक्ति ने महान शक्ति सम्पन्न सम्राट एवं साम्राज्य के विरूद्ध आंदोलन छेड़ा और वे अपने विद्रोह में पूर्ण सफल रहे। निश्चित रूप से इन विद्रोहों में उनकी मातृभूमि एवं स्वदेश प्रेम की मूल भावना छिपी हुई थी।[1] औरंगजेब की मुस्लिम और हिन्दुओं के मध्य परस्पर विरोधी नीति उसके समय–समय पर जारी होने वाले शाही फरमानों में परिलक्षित होती थी। उसने अपने शाही फरमानों में एक ओर जहॉ हिन्दुओं पर अनेक कर थोपे वहीं मुसलमानों को इन करों से छूट दी गई। जिसके फलस्वरूप हिन्दू एवम मुस्लिम समाजों में सामाजिक भेदभाव की गहरी खाई पैदा होती चली गयी। जाटों ने स्वयं को सामरिक रूप से इतना सुदृढ़ कर लिया कि जहॉ एक ओर इतिहासकार तथा सातवीं शती के ब्राह्मण राजा उन्हें शूद्रों की श्रेणी में रखते थे। (मुगल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण में प्रो0 इन्द्र विद्यावाचस्पति के अनुसार) ब्राह्मण राजाओं ने जाट प्रजाओं के सम्बन्ध में नियम बना रखे थे कि वे असली तलवार न बॉध सकें, शाल, मखमल तथा रेशम का कपडाशन न पहन सकें, घोड़ों पर काठी जमाकर बैठ न सकें, सिर और पैर नंगे रखें, उन्हें यह भी आज्ञा थी कि जब वह बाहर घूमने जायें तो अपने कुत्तों को साथ ले जायें। उन्हें शासकों के लिये लकड़ियॉ ढ़ोना उनका कर्तव्य था। वहीं औरंगजेब के काल में राजपूत जिन्हें सामान्य श्रेणी का माना

जाता था वह उनसे सामरिक कार्यों में तथा युद्धों में सहायता लेते थे अपने इन्हीं जुझारू, पराक्रमी और साहसी एवं स्वाभिमानी गुणों ने उन्हें शूद्रों से अभिजात वर्ग में लाकर खड़ा कर दिया। कालान्तर में एक स्थिति वह भी आई कि जाटवीर ब्रजप्रदेश की समस्त हिन्दू जातियों को एक सूत्र में पिरोकर अपने नेतृत्व में मुगलों के खिलाफ युद्ध लड़ने लगे। इस समय इन्हें सामाजिक रूप से अन्य जातियों ने अपने समकक्ष का दर्जा प्रदान किया और इस दर्जे में उत्तरोत्तर वृद्धि करते हुये सम्पूर्ण हिन्दुत्व की रक्षा के लिये जाट शक्ति ने सशक्त भूमिका का निर्वाह कर जन साधारण की आकांक्षाओं को पूरा किया। समाज ने उन्हें निम्न स्थिति से उठाकर उच्च श्रेणी में स्थापित किया तो उन्होंने उच्च श्रेणी में आते ही सम्पूर्ण समाज को निर्देशित करना प्रारम्भ कर दिया और अपनी श्रेष्ठता को स्थापित कर ओछी मानसिकता के परिचायक तुच्छ ब्राह्मण एवं एकरूपीय इतिहासकारों को अपना वास्तविक परिचय कराया। यह परिचय उनकी समाज एवं संस्कृति में आज भी परिलक्षित होता है। हृदय में अत्याचारों के विरूद्ध क्रान्ति की ज्वाला लिये हुये जाट शक्ति यदि किसी विद्रोह में असफल होती तो वे अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति के बलबूते पर अपनी योग्यता व सूझबूझ से अपने पूरे कुटुम्ब और बन्धु बान्धवों को पुनः एक जुट करके एक शक्तिशाली संगठन करते हुये विद्रोह का नया बिगुल बजा देते।

औरंगजेब ने हिन्दुओं के सामाजिक जीवन में हस्तक्षेप करते हुए उसने 1694 ई0 में शाही फरमान के अन्तर्गत हिन्दुओं को मुस्लिम वस्त्र पहनने पर रोक लगा दी।[2] साथ ही घोड़ा, हाथी तथा पालकी की सवारी पर भी रोक लगा दी। उसने मुस्तफाबाद के जागीरदार को आदेश दिया कि एक सोते को बंद कर दिया जाए क्योंकि हिन्दू वहां पूजा पाठ के लिए जाते थे।[3] उसने हिन्दुओं के लिए सभी तरह की आतिशबाजी पर रोक लगा दी।[4] उसने 1703 ई0 में एक हास्यास्पद शाही फरमॉन के तहत उसने साबरमती नदी, अहमदाबाद में शवदाह के लिए रोक लगा दी।[5] इसके पूर्व इसी तरह का आदेश दिल्ली में यमुना नदी के लिए भी लगाया गया था।[6]

औरंगजेब कालीन ब्रजप्रदेश में हिन्दुत्व विरोधी भावनाओं एवं अपनी सभ्यता एवं संस्कृति के पक्ष में जाट शक्ति के सरदार गोकुल सिंह ने जो विद्रोह का विगुल बजाया उसने शाही राजधानी की नाक के नीचे अपनी विरोधी भावनाओं को प्रदर्शित करते हुये सम्पूर्ण ब्रजप्रदेश की जनता का प्रतिनिधित्व किया। यद्यपि गोकुल सिंह का विद्रोह औरंगजेब आलमगीर के लिये शासन तथा राजतन्त्र के प्रति विद्रोह था परन्तु गोकुला जाट ने अपने समाज, संस्कृति एवं धर्म की रक्षा के लिए अपने प्राणों को उत्सर्ग करके जाट शक्ति को समस्त जनता का नेतृत्व प्रदान दिया और उन्हें नई दिशा प्रदान की। ग्रामीण वर्ग, कृषक एवं मजदूर अब जाट शक्ति के झण्डे तले आ गये तथा इन्होंने जाटों को सम्पूर्ण आदर सत्कार एवं मान्यता देकर वर्षों से आ रही परम्पराओं को तोड़कर इन्हें समाज में श्रेष्ठ स्थान प्रदान किया। यद्यपि गोकुल सिंह के विद्रोह को ब्रजप्रदेश में ही उच्च वर्गीय जनता ने समर्थन नहीं दिया तथापि वह औरंगजेब के धार्मिक असहिष्णुता की नीति को देखते हुये मजबूर हुये कि आगामी आने वाले समय में यदि हम एकजुट न हुये तो हमारी भारतीयता की पहचान व स्वयं का अस्तित्व जो कि न के बराबर था पूर्णरूपेण समाप्त हो जायेगा। गोकुल सिंह के विद्रोह से ब्रजप्रदेश के समाज में एक संदेश का सूत्रपात हुआ कि जात पात व ऊंच नीच के बंधनों को छोड़कर यदि स्वधर्मी बन्धुओं के लिये हम एकजुट नहीं होते तो परोक्ष रूप से हम मुगलों को सहयोग देते जायेंगें और अपनी पहचान व अस्तित्व पूर्ण रूप से मिटा लेंगे।

यद्यपि गोकुल सिंह जाट का नाम इतिहास में पूर्ण सम्मानजनक स्थिति प्राप्त नहीं कर पाया है क्योंकि इसका मूल कारण इतिहासकारों की अपनी अलग अलग विचारधाराओं का होना है सम्पूर्ण समाज एवं ब्रजप्रदेश की जनता के लिये गोकुल सिंह का बलिदान एक अद्वितीय उदाहरण था उन व्यक्तियों के लिये और समाज के लिये भी जो स्वयं को निम्न स्तरीय समझते थे। ब्रज प्रदेश में गोकुल सिंह के बाद जाट शक्ति का समर्थन पूर्वतः गूर्जर, मीणा, मेव इत्यादि जातियों ने दिया तथा यह जातियॉ स्वाभाविक रूप से ब्रजप्रदेश के जाट समाज के अर्न्तगत अपने आप को सुरक्षित एवं संरक्षित महसूस करने लगी।

हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि ब्रजप्रदेश की जाट शक्ति के विद्रोह ने शाही मार्गों में लूटपाट तथा अराजकतापूर्ण स्थिति को बढ़ावा दिया। परन्तु यह सभी कार्य सामरिक दृष्टि से उचित थे क्योंकि जाट शक्ति को अपनी पहचान समाज में उच्च स्थान इन्हीं सब कार्यों से प्राप्त हुआ। परिणामस्वरूप मुगल सम्राट औरंगजेब ने भी विवश होकर राजाराम को जमींदारी प्रदान कर यह सिद्ध कर दिया कि ब्रजप्रदेश में जाटों की स्थिति अब पहले से उत्तरोत्तर वृद्धि करती हुई अपनी चरम सीमा को प्राप्त कर रही है। कालान्तर में राजाराम का रिक्त नेतृत्व जोरावर सिंह, फतेह सिंह ने अपनी वयोवृद्ध जाट सरदार भज्जा सिंह के सानिध्य में सम्भाल कर राजपूत शक्ति को भी स्वयं में समाहित किया। आगामी वर्षों में राजपूतों ने जाट शक्ति के साथ संघ बनाकर अपनी पहचान को नये आयाम दिये। इस प्रकार जाट राजपूतों के समकक्ष आ गये जो कि आमेर नरेश कछबाह राजा बिशनसिंह एवं उनके सेनापति हरीसिंह खांगरोत को स्वीकार्य नहीं था। उन्होंने इन्हें दमित करने का भरसक प्रयत्न किया जो कि असफल रहा। विशन सिंह व उसके सेनापति की अपेक्षा ब्रजप्रदेश में जाट शक्ति अधिक प्रभावशाली साबित हुई।

औरंगजेब आलमगीर की रणनीति एवं हिन्दुत्व विरोधी नीति को राजा विशन सिंह कछबाह ने पॉच वर्ष तक चलाया उसके कार्यों ने किसान, मजदूर तथा जाट एकता, स्वदेश प्रेम, धर्म व संस्कृति की भावना को दृढ़ता ही प्रदान की। जाट परिवार अपने गॉवों में बसते तथा उजड़ते रहे। उन्होंने अपनी सुरक्षा के लिये आवश्यकतानुसार टूटी फूटी झोपड़ी तथा ध्वस्त गढ़ियों की मरम्मत करना प्रारम्भ कर दिया। वे दुर्गम स्थानों पर गढ़ियों का निर्माण करते रहे। जाट सरदारों ने खेती जाटव (चमार) परिवारों से कराना प्रारम्भ कर दिया तथा उनके परिवारों को जाट प्रधान गॉवों में लाकर बसाया।[7] इस प्रकार चूरामन ने अपनी जाटशक्ति के सेवार्थ इन निम्न श्रेणी की जॉतियों को लाकर अपनी श्रेष्ठता स्थापित की और वर्षों से चली आ रही अपनी निम्न पहचान को उच्च श्रेणी में परिवर्तित कर श्रेष्ठता प्रदान की। यह श्रेष्ठता कालान्तर में ब्राह्मणों द्वारा मान्य कर दी गई क्योंकि वीर शिरोमणि चूरामन ने औरंगजेब के काल में ब्रजप्रदेश में जाट शक्ति के नेतृत्व की कमान संभालकर जो सशक्त निर्देशन दिया था वह बदन सिंह व

चूरामन के नेतृत्व में भरतपुर राज्य की स्थापना में सहायक हुआ। अब यह पूर्णरूपेण निम्न वर्ग की स्थिति से उबरकर शासक वर्ग की स्थिति को प्राप्त कर गये थे। समाज को इनके द्वारा तत्कालीन समय में निर्देशित होना पड़ा स्वयं के श्रेष्ठता के गुणों को सभ्यता व संस्कृति के रूप में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित करते हुये आधुनिक समय में जाट शक्ति सामान्य वर्ग के रूप में लोकतांन्त्रिक शासन प्रणाली में स्थान प्राप्त कर गई। यह स्थिति इन्होंने औरंगजेब के काल में विद्रोह प्रारम्भ कर प्राप्त की थी और अब यह सम्पूर्ण राष्ट्र तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर समाज में अपनी उपस्थिति का दृढ़ता के साथ अहसास करा रही है।

निष्कर्षतः अपनी निम्नतर स्थिति से उभरते हुये जाट वीरों ने मुगल शासन में छोटे–छोटे विद्रोह के माध्यम से पहले तो स्वयं के बन्धु बान्धवों को संगठित किया तत्पश्चात हिन्दू धर्म के मतावलम्बियों सहित विभिन्न समकक्ष एवं श्रेष्ठ जातियों को एकसूत्र में पिरोकर स्वयं के नेतृत्व में इस्लाम धर्म के मानने वाले को भी प्रभावित किया व अपने झण्ड़े तले एकत्रित किया। जाति, धर्म व संस्कृति के बन्धनों से उपर उठकर मानव जाति को विखण्डित न कर एक सूत्र में पिरोने का कार्य करती है इस प्रकार इन्होंने अर्थात जाट शक्ति ने ने अपने साहसिक कृत्यों द्वारा समाज में शासित वर्ग से शासक वर्ग का लम्बा मार्ग तय किया।

संदर्भ

1. कानूनगो : ऐतिहासिक लेख पृ0 50।
2. श्री राम शर्मा : रिलीजियस पालिसी ऑफ दी मुगल एम्पाअर्स, पृ0 143।
3. डॉ0 चौबे एवं डॉ श्रीवास्तव : मध्ययुगीन भारतीय समाज एवं संस्कृति, पृ0 314।
4. श्री राम शर्मा : रिलीजियस पालिसी ऑफ दी मुगल एम्पाअर्स, पृ0 142।
5. वही पृ0 143।
6. वही पृ0 144।
7. विद्यावाचस्पति : मुगल साम्राज्य का क्षय एवं उसके कारण, पृ0 276।
   कानूनगो : जाटों का इतिहास , पृ0 26–27।

संन्दर्भ ग्रथ सूची–

1. प्रो0 इन्द्र विद्यावाचस्पति : मुगल साम्राज्य का क्षय और उसका कारण, 1949, हिन्दी ग्रथ, रत्नाकर कार्यालय, बम्बई।
2. एफ0एस0 ग्राउस : मथुरा –ए–डिस्ट्रिक्ट मेमोयर, 1873–74।
3. कृष्ण दत्त वाजपेयी : ब्रज का इतिहास, अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मण्डल, मथुरा, संवत 2011।
4. प्रभुदयाल मीतल : ब्रज का सांस्कृति इतिहास, राजकमल प्रकाशन, 19661।
5. डॉ एस0एल0 नागौरी : मुगलकालीन भारत, श्री सरस्वती प्रकाशन, दिल्ली, 2002।
6. के0ए0 निजामी : स्टडीज इन मेडीवल इण्डियन हिस्ट्री एण्ड कल्चर, इलाहबाद, 1966।
7. औरंगजेबनामा : अनुवादक मुंशी देवीप्रसाद, भाग 1–3, बम्बई, 1909।
8. गिरीश चन्द्र द्विवेदी : जनरल ऑफ इण्डियन हिस्ट्री।
9. झारखंण्डे चौबे एवं डॉ0 कन्हैयालाल श्रीवास्तव : मध्ययुगीन भारतीय समाज एवं संस्कृति, उ0प्र0 हि0 संस्थान, लखनऊ, 1979।
10. बी0 एन0 लूनिया : औरंगजेब आलमगीर, कमल प्रकाशन, इंदौर, 1981।
11. श्रीराम शर्मा : द रिलीजस पालिसी ऑफ द मुगल एम्परस।
12. सर जान स्ट्रेची : इण्डिया इटस एडमिनिस्ट्रेशन एण्ड प्रोग्रेस।
13. हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमेन्ट इण्डिया, दिल्द 1।
14. हमीदा खातून नकवी : अरबराइजेशन एण्ड अर्वन सैन्टर्स अण्डर द मुगलस।
15. विपिन बिहारी सिन्हा : मध्यकालीन भारत, ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001।
16. राजेश पाण्डेय : भारत का सांस्कृतिक इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ, 1976।
17. डॉ0 जदुनाथ सरकार : औरंगजेब (हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब) भाग 1–5, कलकत्ता।
18. डॉ0 जदुनाथ सरकार : फाल ऑफ द मुगल एम्पायर, भाग 2, हिन्दी अनुवाद, मुगल साम्राज्य का पतन, अनु0 डॉ0 मथुरा लाल शर्मा।
19. सी0 पी0 वैद्य : हिस्ट्री ऑफ मैडीवल हिन्दू इण्डिया।
20. द फाउण्डेशन ऑफ मुस्लिम रूल इन इण्डिया, हबीबुल्लाह।
21. के0एम0 अशरफ : लाइफ एण्ड कण्डीशंस ऑफ दी पीपुल ऑफ हिन्दुस्तान।

डॉ. नीरज कुमार गौड़
प्राचार्य , एच के एल कालेज ऑफ ऐजूकेशन, सम्बध्द पंजाब विश्वविद्यालय, चंड़ीगढ़, गुरूहरसहाय, फिरोजपुर. (पंजाब)